अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

मंदिरों के नगर से महातपस्वी महाश्रमण ने पकड़ी गांवों की डगर

-छाए कोहरे के कारण दक्षिण भारत में दिखा उत्तर भारत का मौसम

-अहिंसा यात्रा संग आचार्यश्री पहुंचे पालूर स्थित आदि द्राविड़ हायर सेकेण्ड्री स्कूल

-आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को मानव जीवन को धर्ममय बनाने की दी पावन प्रेरणा

06.12.2018 वाजालाबाद, कांचीपुरम (तमिलनाडु): दक्षिण भारत में मंदिरों की नगरी के रूप में विख्यात कांचीपुरम नगर के बाद से जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ अपनी अहिंसा यात्रा लेकर गांवों की डगर पकड़ ली है। पालार नदी के किनारे-किनारे गतिमान आचार्यश्री महाश्रमणजी शुक्रवार को पालूर गांव स्थित गवर्नमेंट आदि द्राविड़ हायर सेकेण्ड्री स्कूल पधारे। स्कूल के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी का भावभीना स्वागत किया।

शुक्रवार को प्रातः जब आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के साथ आगे की ओर गतिमान होने को तैयार हुए तो सुबह का मौसम कोहरे से भरा हुआ था। वृक्षों पर पड़ी ओस की बूंदे मानों बरसात का अहसास करा रही थीं। आचार्यश्री जब विहार पथ पर अग्रसर हुए तो कोहरा छाया हुआ था। घने कोहरे को देख कर तो ऐसा लग रहा था कि अहिंसा यात्रा दक्षिण भारत में नहीं बल्कि उत्तर भारत में विहरण कर रही है। क्योंकि वर्तमान में समय में उत्तर भारत ठंड का मौसम है और ठंड के कारण कोहरा भी अपने पूर्ण प्रभाव के साथ होता है। दक्षिण भारत में छाए कोहरे के बीच एक सुखद अहसास यह था कि आज सूर्य की आतप बरसाने वाली किरणें नदारद थीं। ऐसे मौसम में आचार्यश्री अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए गतिमान थे। आचार्यश्री लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर पालूर गांव स्थित गवर्नमेंट आदि द्राविड़ हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे।

आचार्यश्री ने विद्यालय प्रांगण में बने प्रवचन पंडाल में उपस्थित श्रद्धालुओं को अपनी अमृतवाणी का रसपान कराते हुए कहा कि मनुष्य जीवन को धर्ममय बनाने के लिए सात बाते बताई गई हैं। इनमें पहली बात है कि पात्र में दान देने का भाव होना चाहिए। आदमी के मन में दान देने की भावना होनी चाहिए। घर पर आए शुद्ध साधु के पात्र में दान देने की भावना हो। गुरु, आचार्य, साधु-संतों के प्रति विनय का भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। उनका अभिनन्दन, वंदन यथोचित रूप में रखने का प्रयास करना चाहिए। तीसरी बात बताई गई है कि सभी प्राणियों के प्रति दया-अनुकंपा का भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को ऐसी सोच रखने का प्रयास करना चाहिए कि मेरे द्वारा किसी भी प्राणी को कष्ट न होने पाए।

चैथी बात बताई गई कि न्यायपूर्ण निर्णय और न्यायपूर्ण वर्तन करने का प्रयास करना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में आदमी को न्याय से नहीं हटना चाहिए। न्याय के संदर्भ में कहा गया कि आदमी को मौत की स्थिति बन जाए तो भी न्याय के पथ से हटना नहीं चाहिए। धीर पुरुष न्याय पथ से विचलित नहीं होते। पक्षपात नहीं होना चाहिए। आदमी को न्याय के लिए अडिग रहने का प्रयास करना चाहिए। पांच बात है कि आदमी को दूसरों का हित करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों का हित करने वाले का स्वयं ही हित हो सकता है। इसलिए आदमी को दूसरों का हित करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को किसी बुरा करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। छठी बात होती है कि आदमी को धन, पद, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति आदि किसी का घमंड नहीं करना चाहिए। आदमी को किसी चीज का घमंड नहीं करना चाहिए। सातवीं बात है कि आदमी को संतों की संगति अथवा सज्जनों की संगति में रहने का प्रयास करना चाहिए। संतों की संगति से अच्छे संस्कार आ सकते हैं और जीवन अच्छा बन सकता है। गृहस्थ को अपनी सीमा में धर्म का आचरण करना चाहिए और जीवन को सुफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।